ख़ुदा मुहैया करेगा

आज़माते वक़्त मज़बूती

khudā muhaiyā karegā. āzmāte waqt mazbūtī

God Will Provide. Strength Through Trial

by Bakhtullah

[*Zinda Kalam 5*]

(Urdu—Hindi script)

© 2026 Chashma Media.
published and printed by
GWCS, New Delhi

Bible text is from UGV.

illus. R. Gunther
https://freebibleimages.org/illustrations/rg-abraham-sarah/; ditto https://freebibleimages.org/illustrations/ls-abraham-isaac/.

for enquiries or to request more copies:
askandanswer786@gmail.com

फ़हरिस्त

आज़माइश से मज़बूत हो जाओ	2
ख़ुदा के वादे से लिपटे रहो	5
तब ख़ुदा मुहैया करेगा	9
तब ख़ुदा बरकत देगा	12
तौरेत, पैदाइश 22:1-18	15

जब हज़रत इब्राहीम 75 साल का था तो ख़ुदा ने उसे अपने वतन और अज़ीज़ों को छोड़ने का हुक्म दिया। इब्राहीम सीधा रवाना हुआ। चलते चलते वह फ़लस्तीन पहुँच गया। तब ख़ुदा ने फ़रमाया कि यह तेरी औलाद का मुल्क होगा। उस वक़्त इब्राहीम के बेटा पैदा नहीं हुआ था। उसे कई साल इंतज़ार करना पड़ा। आख़िर में बेटा पैदा हुआ। उसका नाम : इसहाक़। जब इसहाक़ जवान हुआ तो लिखा है,

> कुछ अरसे के बाद अल्लाह ने इब्राहीम को आज़माया।
> उसने उससे कहा, “इब्राहीम!”
> इब्राहीम ने जवाब दिया, “जी, मैं हाज़िर हूँ।”

► **ख़ुदा के बारे में क्या लिखा है?**

यह कि उसने इब्राहीम को आज़माया। इससे हम पहला सबक़ सीखते हैं,

आज़माइश से मज़बूत हो जाओ

ख़ुदा ने इब्राहीम को क्यों आज़माया?

► **फ़र्ज़ करो कि आपने मिट्टी से ईंट बनाई। क्या वह मज़बूत होगी?**
एक हद तक ज़रूर। लेकिन पानी में डाल दी तो गल जाएगी।

► **लेकिन जब आप मिट्टी की ईंट भट्टे में रखकर पकाएँगे तो वह किस तरह बनेगी?**
आग में वह मज़बूत और ठोस हो जाएगी। उसे मकान के लिए इस्तेमाल किया तो सैलाब में भी नहीं गलेगी। हमारा ईमान भी ऐसा ही होता है। वह आज़माइश की आग में पककर मज़बूत हो जाता है।

► **ख़ुदा की बात सुनकर इब्राहीम ने क्या जवाब दिया?**
उसने सीधे कहा कि मैं हाज़िर हूँ। यानी मैं हर हुक्म पूरा करने को तैयार हूँ। तब ख़ुदा ने फ़रमाया,

> अपने इकलौते बेटे इसहाक़ को जिसे तू प्यार करता है साथ लेकर मोरियाह के इलाक़े में चला जा। वहाँ मैं तुझे एक पहाड़ दिखाऊँगा। उस पर अपने बेटे को क़ुरबान कर दे। उसे ज़बह करके क़ुरबानगाह पर जला देना।

► **किसी को क़त्ल करना तो सख़्त मना है। फिर भी ख़ुदा ने यह क़ुरबानी इब्राहीम से तलब की। क्यों?**

वह उसका ईमान आज़माना चाहता था। इसहाक़ तो इब्राहीम का प्यारा बेटा था। न सिर्फ़ यह बल्कि ख़ुदा ने वादा भी किया था कि इसहाक़ की औलाद को मुल्क हासिल होगा।

► **क्या इब्राहीम का ख़ुदा पर ईमान झूठ निकलेगा या और पक्का हो जाएगा?**

आइए हम देखते हैं। लिखा है,

> सुबह-सवेरे इब्राहीम उठा और अपने गधे पर ज़ीन कसा। उसने अपने साथ दो नौकरों और अपने बेटे इसहाक़ को लिया। फिर वह क़ुरबानी को जलाने के लिए लकड़ी

> काटकर उस जगह की तरफ़ रवाना हुआ जो अल्लाह ने उसे बताई थी।

► **इब्राहीम ने ख़ुदा के हुक्म पर क्या किया?**

उसने सुबह-सवेरे उठकर गधे पर ज़ीन कसा। उसने इसहाक़ के अलावा दो नौकर भी अपने साथ लिए। फिर उसने लकड़ी काट ली।

► **इसमें अजीब बात क्या है?**

उसने पहले गधे को तैयार किया, फिर ही लकड़ी काट ली। आम तौर पर बंदा पहले लकड़ी काटता, तब ही गधे पर ज़ीन कसकर लकड़ी लादता है।

► **इससे क्या मालूम होता है?**

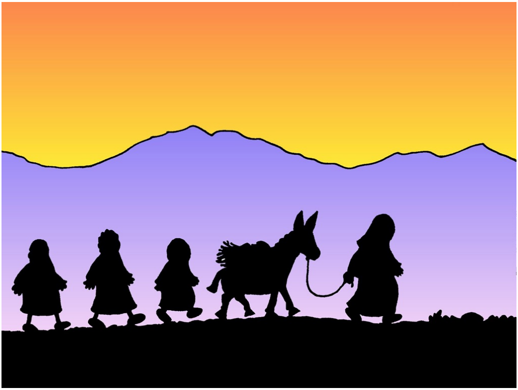

ख़ुदा का यह हुक्म पूरा करना उसे मुश्किल लग रहा था। लगता है कि घबराहट के बाइस सफ़र की तैयारियाँ आगे-पीछे हुईं। दूसरा सबक़,

ख़ुदा के वादे से लिपटे रहो

लिखा है,

> सफ़र करते करते तीसरे दिन क़ुरबानी की जगह दूर से नज़र आई। उसने नौकरों से कहा, “यहाँ गधे के पास ठहरो। मैं लड़के के साथ वहाँ जाकर परस्तिश करूँगा। फिर हम तुम्हारे पास वापस आ जाएँगे।”

► **क्या आपने नोट किया कि इब्राहीम ने क्या अजीब बात फ़रमाई?**

उसने नहीं कहा कि मैं वापस आऊँगा। नहीं, वह बोला कि हम ही वापस आएँगे। बेशक वह अपने प्यारे बेटे को क़ुरबान करने को जा रहा था। फिर भी उसे ख़ुदा का वादा याद था कि इसहाक़ की औलाद को मुल्क मिलेगा। इब्राहीम को पूरा यक़ीन था कि ऐसा ही होगा। तब लिखा है,

> इब्राहीम ने क़ुरबानी को जलाने के लिए लकड़ियाँ इसहाक़ के कंधों पर रख दीं और ख़ुद छुरी और आग जलाने के लिए अंगारों का बरतन उठाया। दोनों चल दिए।
> इसहाक़ बोला, “अब्बू!”
> इब्राहीम ने कहा, “जी बेटा।”
> “अब्बू, आग और लकड़ियाँ तो हमारे पास हैं, लेकिन क़ुरबानी के लिए भेड़ या बकरी कहाँ है?”
> इब्राहीम ने जवाब दिया, “अल्लाह ख़ुद क़ुरबानी के लिए जानवर मुहैया करेगा, बेटा।” वह आगे बढ़ गए।

► **क्या इसहाक़ को पता था कि वह ख़ुद क़ुरबानी होगा?**

बिलकुल नहीं। इसलिए चलते चलते वह पूछने लगा कि क़ुरबान होनेवाला जानवर कहाँ है।

► **इब्राहीम ने क्या जवाब दिया?**

यह कि अल्लाह ख़ुद जानवर मुहैया करेगा।

► **इससे हम इब्राहीम के ईमान के बारे में क्या सीखते हैं?**

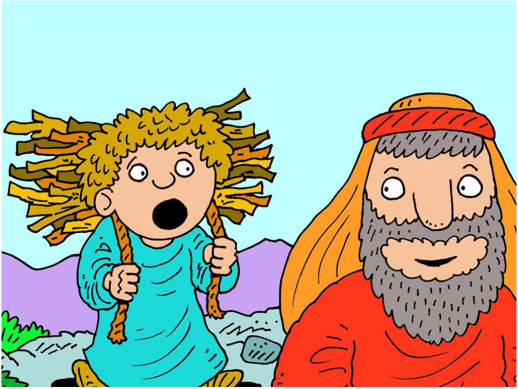

एक तरफ़ वह सख़्त परेशान तो था। लेकिन दूसरी तरफ़ उसे पूरा यक़ीन था कि जो वादा ख़ुदा ने इसहाक़ के बारे में फ़रमाया है वह पूरा हो जाएगा। फिर लिखा है,

> चलते चलते वह उस मक़ाम पर पहुँचे जो अल्लाह ने उस पर ज़ाहिर किया था। इब्राहीम ने वहाँ क़ुरबानगाह बनाई और उस पर लकड़ियाँ तरतीब से रख दीं। फिर उसने इसहाक़ को बाँधकर लकड़ियों पर रख दिया और छुरी पकड़ ली ताकि उसे ज़बह करे।

► **मुक़र्ररा पहाड़ पर पहुँचकर इब्राहीम ने क्या किया?**

उसने क़ुरबानगाह बनाकर उस पर लकड़ियाँ रख दीं, फिर इसहाक़ को बाँधकर लकड़ियों पर लिटा दिया। इसके बाद उसने छुरी पकड़ ली ताकि अपने प्यारे बेटे को ज़बह करे।

► **क्या इसहाक़ ने भागने की कोशिश न की?**

बिलकुल नहीं हालाँकि इब्राहीम बूढ़ा था। अगर बेटा चाहता तो आसानी से भाग सकता। लेकिन उसने ऐसा न किया। वह क़ुरबान होने के लिए तैयार था। माँ-बाप का लाडला अपने बाप के हाथ मरने के लिए तैयार था। उसने ख़ामोशी से मौत का सामना किया। तीसरा सबक़,

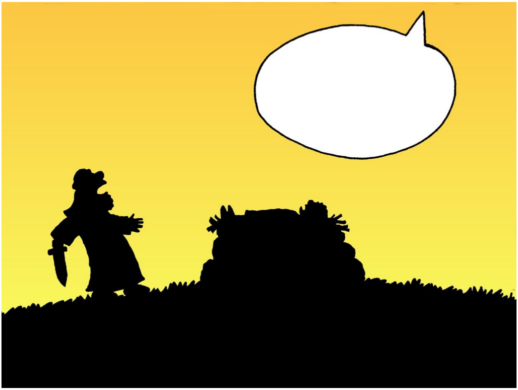

तब ख़ुदा मुहैया करेगा

जो आज़माइश की आग में पककर मज़बूत हो जाता है वह ख़ुदा के वादे से लिपटा रहता है। ऐसे ईमानदार के लिए ख़ुदा अच्छा रास्ता मुहैया करेगा। इब्राहीम इसकी अच्छी मिसाल है। वह छुरी पकड़े बेटे को ज़बह करने के लिए खड़ा हुआ। तब क्या हुआ? लिखा है,

> ऐन उसी वक़्त रब के फ़रिश्ते ने आसमान पर से उसे आवाज़ दी, "इब्राहीम, इब्राहीम!"
> इब्राहीम ने कहा, "जी, मैं हाज़िर हूँ।"
> फ़रिश्ते ने कहा, "अपने बेटे पर हाथ न चला, न उसके साथ कुछ कर। अब मैंने जान लिया है कि तू अल्लाह

> का ख़ौफ़ रखता है, क्योंकि तू अपने इकलौते बेटे को भी मुझे देने के लिए तैयार है।”

► **इब्राहीम को क्या बताया गया?**

अपने बेटे पर हाथ न चला।

► **क्यों?**

ख़ुदा ने जान लिया था कि इब्राहीम अल्लाह का ख़ौफ़ रखता है।

► **इब्राहीम ने किस तरह दिखाया कि वह ख़ुदा का ख़ौफ़ रखता है?**

इसमें कि वह अपने बेटे को क़ुरबान करने के लिए तैयार था। तब लिखा है,

> अचानक इब्राहीम को एक मेंढा नज़र आया जिसके सींग गुंजान झाड़ियों में फँसे हुए थे। इब्राहीम ने उसे ज़बह करके अपने बेटे की जगह क़ुरबानी के तौर पर जला दिया।

► **ख़ुदा ने क्या मुहैया किया?**

एक मेंढा।

► **मेंढा क्यों?**

मेंढा इसलिए कि इब्राहीम अपने बेटे की जगह मेंढा क़ुरबान करे। तब लिखा है,

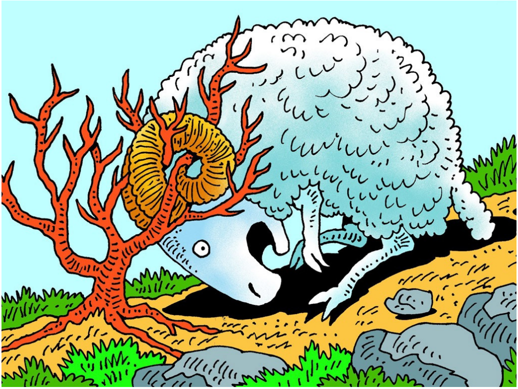

> उसने उस मक़ाम का नाम “रब मुहैया करता है” रखा। इसलिए आज तक कहा जाता है, “रब के पहाड़ पर मुहैया किया जाता है।”

► **रब मुहैया करता है : इससे इब्राहीम क्या कहना चाहता था?**

जब ख़ुदा हमसे क़ुरबानी माँगता है तो वह मुहैया भी करता है। आग में पकी हुई ईंट की तरह इब्राहीम का ईमान आज़माइश की आग में पककर और मज़बूत हो गया था। क्यों? वह ख़ुदा के वादे से लिपटा रहा था। तब ख़ुदा ने इसहाक़ की जगह क़ुरबानी मुहैया की—एक मेंढा झाड़ियों में उलझकर क़ुरबानी के लिए दस्तयाब हुआ।

दो हज़ार साल के बाद ख़ुदा ने इनसान के लिए एक और क़ुरबानी मुहैया की।

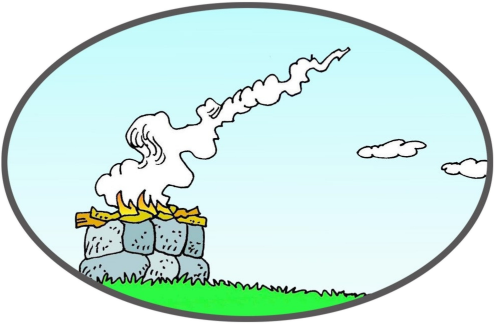

► **कौन-सी क़ुरबानी?**

ईसा मसीह की क़ुरबानी।

► **इस क़ुरबानी का क्या मक़सद था?**

मक़सद यह था कि जो उस पर ईमान लाए हलाक न हो बल्कि अबदी ज़िंदगी पाए। अब हम एक चौथा सबक़ सीखते हैं,

तब ख़ुदा बरकत देगा

इब्राहीम का ईमान देखकर ख़ुदा ने न सिर्फ़ अपनी तरफ़ से क़ुरबानी मुहैया की। साथ साथ उसने उसे बरकत भी दी। लिखा है,

> रब के फ़रिश्ते ने एक बार फिर आसमान पर से पुकारकर उससे बात की। "रब का फ़रमान है, मेरी ज़ात की क़सम,

> चूँकि तूने यह किया और अपने इकलौते बेटे को मुझे पेश करने के लिए तैयार था इसलिए मैं तुझे बरकत दूँगा और तेरी औलाद को आसमान के सितारों और साहिल की रेत की तरह बेशुमार होने दूँगा। तेरी औलाद अपने दुश्मनों के शहरों के दरवाज़ों पर क़ब्ज़ा करेगी। चूँकि तूने मेरी सुनी इसलिए तेरी औलाद से दुनिया की तमाम क़ौमें बरकत पाएँगी।”

► **फ़रिश्ते ने ख़ुदा का क्या पैग़ाम पहुँचाया?**

यह कि तू मुझे अपने सबसे प्यारी चीज़ क़ुरबान करने के लिए तैयार था। इसलिए मैं तुझे बरकत दूँगा। तेरी औलाद बेशुमार होगी।

वह दुश्मन पर क़ाबू पाकर तमाम क़ौमों के लिए बरकत का बाइस बनेगी।

► **इब्राहीम को यह बरकत क्यों हासिल हुई?**

इसलिए कि उसका ईमान आज़माइश की आग में पककर और मज़बूत हो गया था।

► **क्यों?**

इसलिए कि वह ख़ुदा के वादे से लिपटा रहा था।

► **क्या यह बरकत हमें भी हासिल हो सकती है?**

जी हाँ।

► **किस तरह?**

जब हमारा ईमान आज़माइश की भट्टी में पककर और मज़बूत हो जाता है और हम ख़ुदा के वादे से लिपटे रहते हैं तब हमें बरकत हासिल होती है।

► **हमें किस क़िस्म की बरकत हासिल होती है?**

इब्राहीम को बेशुमार औलाद की बरकत हासिल हुई। जो बरकत हमें हासिल होती है वह कहीं बेहतर है। आज ख़ुदा हमें आज़माकर फ़रमाता है कि आओ, वह क़ुरबानी क़बूल करो जो मैंने दी जब मैंने अपने फ़रज़ंद ईसा मसीह को दुनिया में भेज दिया। इब्राहीम के बेटे की जगह एक मेंढा क़ुरबान हुआ। लेकिन तुम्हारी जगह ईसा मसीह क़ुरबान हुआ। यही क़ुरबानी तुम्हें नजात का रास्ता और

अबदी ज़िंदगी मुहैया करता है। तब तुम इब्राहीम की असली रूहानी औलाद होगे।

► **क्या आपको यह बरकत हासिल हुई है?**

तौरेत, पैदाइश 22:1-18

कुछ अरसे के बाद अल्लाह ने इब्राहीम को आज़माया। उसने उससे कहा, "इब्राहीम!" उसने जवाब दिया, "जी, मैं हाज़िर हूँ।" अल्लाह ने कहा, "अपने इकलौते बेटे इसहाक़ को जिसे तू प्यार करता है साथ लेकर मोरियाह के इलाक़े में चला जा। वहाँ मैं तुझे एक पहाड़ दिखाऊँगा। उस पर अपने बेटे को क़ुरबान कर दे। उसे ज़बह करके क़ुरबानगाह पर जला देना।"

सुबह-सवेरे इब्राहीम उठा और अपने गधे पर ज़ीन कसा। उसने अपने साथ दो नौकरों और अपने बेटे इसहाक़ को लिया। फिर वह क़ुरबानी को जलाने के लिए लकड़ी काटकर उस जगह की तरफ़ रवाना हुआ जो अल्लाह ने उसे बताई थी। सफ़र करते करते तीसरे दिन क़ुरबानी की जगह इब्राहीम को दूर से नज़र आई। उसने नौकरों से कहा, "यहाँ गधे के पास ठहरो। मैं लड़के के साथ वहाँ जाकर परस्तिश करूँगा। फिर हम तुम्हारे पास वापस आ जाएँगे।"

इब्राहीम ने क़ुरबानी को जलाने के लिए लकड़ियाँ इसहाक़ के कंधों पर रख दीं और ख़ुद छुरी और आग जलाने के लिए अंगारों का बरतन उठाया। दोनों चल दिए। इसहाक़ बोला, “अब्बू!” इब्राहीम ने कहा, “जी बेटा।” “अब्बू, आग और लकड़ियाँ तो हमारे पास हैं, लेकिन क़ुरबानी के लिए भेड़ या बकरी कहाँ है?” इब्राहीम ने जवाब दिया, “अल्लाह ख़ुद क़ुरबानी के लिए जानवर मुहैया करेगा, बेटा।” वह आगे बढ़ गए।

चलते चलते वह उस मक़ाम पर पहुँचे जो अल्लाह ने उस पर ज़ाहिर किया था। इब्राहीम ने वहाँ क़ुरबानगाह बनाई और उस पर लकड़ियाँ तरतीब से रख दीं। फिर उसने इसहाक़ को बाँधकर लकड़ियों पर रख दिया और छुरी पकड़ ली ताकि अपने बेटे को ज़बह करे। ऐन उसी वक़्त रब के फ़रिश्ते ने आसमान पर से उसे आवाज़ दी, “इब्राहीम, इब्राहीम!” इब्राहीम ने कहा, “जी, मैं हाज़िर हूँ।” फ़रिश्ते ने कहा, “अपने बेटे पर हाथ न चला, न उसके साथ कुछ कर। अब मैंने जान लिया है कि तू अल्लाह का ख़ौफ़ रखता है, क्योंकि तू अपने इकलौते बेटे को भी मुझे देने के लिए तैयार है।” अचानक इब्राहीम को एक मेंढा नज़र आया जिसके सींग गुंजान झाड़ियों में फँसे हुए थे। इब्राहीम ने उसे ज़बह करके अपने बेटे की जगह क़ुरबानी के तौर पर जला दिया। उसने उस मक़ाम का नाम

“रब मुहैया करता है” रखा। इसलिए आज तक कहा जाता है, “रब के पहाड़ पर मुहैया किया जाता है।”

रब के फ़रिश्ते ने एक बार फिर आसमान पर से पुकारकर उससे बात की। “रब का फ़रमान है, मेरी ज़ात की क़सम, चूँकि तूने यह किया और अपने इकलौते बेटे को मुझे पेश करने के लिए तैयार था इसलिए मैं तुझे बरकत दूँगा और तेरी औलाद को आसमान के सितारों और साहिल की रेत की तरह बेशुमार होने दूँगा। तेरी औलाद अपने दुश्मनों के शहरों के दरवाज़ों पर क़ब्ज़ा करेगी। चूँकि तूने मेरी सुनी इसलिए तेरी औलाद से दुनिया की तमाम क़ौमें बरकत पाएँगी।”